

卷之五

न सा मधि निष्ठु कृष्ण टि मयि वा सँ ॥ ॥ नागा ॥ वना वि ॥ अ ०
गात्र ॥ न ईश्वर व कृष्ण ल क लि सदन ॥ पु दिहा ना ॥ ध मा ध व स
मि य म दि ह विल स व नि न र स ह सि ग व द न ॥ व य द मि र्द ॥ ५५ ॥
न व ह व द ॥ क द ल ल य न सा न य वि ध ना ॥ ध मा ध व स मी
प मि ह विल स कृ य क ल स ग ल ल हा न ॥ वृ स स व य न वि ग

सुविवासागहः। यविना। धमाधवसमीयमिहवित्रसुवनि
नत्रलिंगगीर्ण॥ विगतवद् वलिनवचल्लवसूचन। यविना
धसमीयमिहवित्रसचित्रमलसचिनऊचन॥ मधू मूदिगम
धूयकूलललिंगवाधः। यविना। धमाधवसमीयमिहविल
समदनहावत्ररसराव॥ मधूगवल्लिकनिकननितदमुख

न। यविना। धमाधवसमीयमिहवि। लसदनव
वित्रवित्रल्लिखन॥ विदिगयमावतिमुखसमाऊ। कूकू म
नामसकूललिंगमिहसल्लिखनयदवकविवाकवाक॥
नाम॥ वनावि॥ यतिगात्र॥ नाधवतविलाकनविकसिगवि वि
धविकात्रविहसं। ऊल्लनिमिहविधूसल्लुल्लदणनगर

सुन्दरक सु मल्ल कर्णं नि मिलादिग विधु निर्मल हा मं जलं मल
 यज गिलक निवर्णं ॥ विपुल पुल क द व द लु वि रं त ति क लि
 क ना ही व धी रं ॥ स ति ग व कि र हा स मू ह स मू क ल रू व व स र
 ग व नी रं ॥ श्री ज य द व र ति ग म ति र ह स त वि र व वि रू व व
 रा रं ॥ स व स ग द्दि तु वि त वि ति धा य ह वि रू क ना द य रा

॥ [redacted] ॥ रागा ॥ ना स क ली ॥ व क गाली ना रा ॥ कि हा ल य व य न र ल
 कू व का मि ति व व व न लि न वि ति व र्णं ॥ ग व य द व ल व र वि
 य ना र व मि द स नू र व उ स र व र्णं ॥ क व स धू ना ना रा य व स नू ग
 ग स नू स व ना धि क ॥ ५ ॥ क व क म ल र क ना मि व व व स ह मा
 रा मि ना मि वि दू रं ॥ क व मू य कू व व य ना य वि सा मि व नू पू र

मन्त्रः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हृत्तिहृत्ति वसा मित्र विमित्रि त वन वन सा ॥ स्म वति मधू सु द ना सा
म पि न व न सा ॥ हृत्ति व न ह ह न ह ह य द व क वि शा व धि ॥ व स
तु हृदि यू व ति त्रि प का म ल क ला व नी ॥ ॥ ना ग ॥ व स क ॥ य
जि ना लि ना व ॥ स्म व स म ला वि त वि त वि त व ह ॥ ग त्रि त कू स म
द व वि लू लि त क ह ॥ का पि म धू नि यू ह ॥ वि ल स ति यू व ति त्र धि
क यु ह म स्वि ॥ ५ ॥ वि क व ज ल ज ल लि ना न न व द ॥ ग द ध

प्रथा नव रस कृष्ण गदा ॥ चंदन कुशुल ललिता वसन जय नः
 गति लाला ॥ दयिता विला किं न लज्जिता दसिना वद विध कृष्णि
 वति नम वसिना ॥ विकल पुलक पथ वरं धर्म ग्ध सिता ति मिः
 लिता विकसिता तं ग ॥ अमर लक्ष्मण लस रग लवी वा पति पति
 ना वति वल धी वा ॥ श्री जय देव शक्ति राह वि वसिना ॥ कलिक ल
 घन न ययु पति मिता ॥ कलिक ल घन न ययु पति मिता ॥

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥

॥ वाग ॥ सुजनी ॥ श्री गाली नात्र ॥ समुद्रिग मदन वसनी वदन व
 मदन वलि ता धन ॥ विलिखति तिलकं यविल मदन लंक मृग मि
 ववजनी कन ॥ वसना यमूना पुलि न वन विजयी मूना विधूनाः
 ॥ ४ ॥ घन वयन विध वयति विक् न ललिता वल्लभ नन ॥ क
 दूव क कसु मंद पलास वसं वति पति मृग का नन ॥ घट यति मृ
 घन क वयन गगन मृग मदन विलिख विलिख मसि वस मसल

तावक पटलं नखपद शनिरुषित ॥ जित विहसक लमृदुज
 यगलं कवतल नलिनीदल ॥ मलकत कलयं मधुकल निव
 यं विगत वंति हिमसीतल ॥ त्रिगृहजघन विपलापघन मन
 सिजकनकासुत ॥ मनि वसत्रमनं तावत हसतं विक्रियति क
 नवासुत ॥ वं वध किं लयक मलातिलय नखमणिगणपूजि
 त ॥ त्रि वपव वधं यावकत वधं जनयति हृदि याजित ॥ वमय

तिसृदली कामपि शुद्धं खल हलधनसाद वन किमरुतमवर्गवि
 वमिवविलसं वद सखि विटपादव ॥ ॐ ह वध हत कृत ह विगुः
 हत मधूविपूदसवक ॥ कलियूगवनिर्गतवसुद्विर्ग क विः
 नृपणीजयदवक ॥ [REDACTED] ॥ वाग ॥ ववाली ॥ एकगाल ॥ अनिलतः
 वलक वलयन यतन यगति नसाकिं लयलयनन ॥ सखियाव
 मितावनमालिना ॥ ५ ॥ विकसित सवसिजललितामृश्वतसूट

न
 र
 ५

